लोक पर्व हरेला

Azadi Ka Amrit Mahotsav

"Harela" is a festival of greenery, peace, prosperity and environmental conservation. Harela means "day of green" and is celebrated in the month of Shravan (the fifth month of the Hindu lunar calendar) to worship lord Shiva and goddess Parvati. People across Uttarakhand, associate greenery with prosperity. Although most of the festival of Hindu region in India are related to the lunar calendar (like Vikram Samvat), only then their data keeps changing in the Gregorian calendar. But the Harela festival is celebrated on the day of Kark Sankranti in the month of Shravan, which does not depend on the movement of the moon, but depends on the direction of the sun from the earth. That's why it falls on 16 or 17 July every year. On this day the sun enters into the kark.

Harela symbolized the sowing season and new harvest, it advocates saving and conserving the environment. Seed and plants are sown on this day to spread awareness and practice of planting trees. It is believed that trees planted on Harela will undoubtedly grow and live healthy.

In the above context and to create awareness among different stakeholders, the institute every year celebrate the Harela though large scale plantation of multipurpose and high value plant species to bring greenery in the region.

Chief guest
Shri. Balbeer Singh
Gram Pradhan, Katarmal

Chairperson
Prof. Sunil Nautiyal
Director, GBPNIHE
Kosi-Katarmal, Almora

Event focus

- To create awareness among the villagers and school children on importance of Harela.
- To encourage diverse stakeholders (students and villagers) for plantation of native plants species

Venue

Katarmal village, Hawalbag block,
Almora, Uttarakhand
Date: 16/7/2022

Programme

10:00-10:30 hrs	Inaugural session
10:30-12:00 hrs	Plantation of Multipurpose trees and medicinal plants
12:30-13:00 hrs	Concluding remarks and way forward

Coordinator
Dr. I. D. Bhatt, Scientist "F" &
Center Head, CBCM

Conveners
Dr. Satish Arya, Scientist "D"
Dr. Subodh Airi "Sr. Technical Officer"

Organized by
Center for Biodiversity Conservation and Management (CBCM)
G. B. Pant National Institute of Himalayan Environment (NIHE)

लोक पर्व हरेला

Azadi Ka Amrit Mahotsav

"हरेला" हरियाली, शांति, समृद्धि और पर्यावरण संरक्षण का त्योहार है। हरेला का अर्थ है "हरे रंग का दिन" और इसे श्रावण (हिंदू चंद्र कैलेंडर का पांचवां महीना) के महीने में मनाया जाता है जब भगवान शिव और देवी पार्वती की पूजा की जाती है । पूरे उत्तराखंड में लोग हरियाली को समृद्धि से जोड़ते हैं। हालांकि भारत में हिंदू क्षेत्र के अधिकांश त्योहार चंद्र कैलेंडर (जैसे विक्रम संवत) से संबंधित हैं, जिस कारण ग्रेगोरियन कैलेंडर में उनकी तारीख बदलती रहती है। लेकिन हरेला पर्व श्रावण मास में कर्क संक्रांति के दिन मनाया जाता है, जो चंद्रमा की चाल पर निर्भर नहीं करता, लेकिन यह पृथ्वी से सूर्य की दिशा पर निर्भर करता है। इसलिए यह हर साल 16 या 17 जुलाई को पड़ता है। इस दिन सूर्य कर्क में प्रवेश करता है।

हरेला बुवाई के मौसम और नई फसल का प्रतीक है, यह पर्यावरण को बचाने और संरक्षित करने का समर्थन करता है। समाज में जागरूकता फैलाने और पेड़ लगाने की प्रथा के लिए इस दिन बीज और पौधों को बोया जाता है। ऐसा माना जाता है कि हरेला पर लगाए गए पेड़ निस्संदेह बढ़ेंगे और स्वस्थ रहेंगे।

उपरोक्त के संदर्भ में और विभिन्न हितधारकों के बीच हरियाली के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए, संस्थान हर वर्ष बहुउद्देशीय और उच्च मूल्य वाले पौधों की प्रजातियों का बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कर हरेला मनाता है

मुख्य अतिथि
बलबीर सिह, ग्राम प्रधान,
कटारमल

अध्यक्ष
प्रो. सुनील नौटियाल
निदेशक, जी.बी.पी.एन.आई.एच.ई.
कोसी-कटारमल, अल्मोरा

कार्यशाला: मुख्य बिन्दु

- ग्रामीणों और स्कूली बच्चों में हरेला के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- स्वदेशी प्रजातियों के पौधों के रोपण के लिए विविध हितधारकों (छात्रों और ग्रामीणों) को प्रोत्साहित करना

स्थान
कटारमल ग्राम, हवालबाग ब्लाक,
अल्मोड़ा, उत्तराखंड
दिनाक: १६/७/२०२२

कार्यक्रम

10:00-10:30 बजे	उद्घाटन सत्र
10:30-12:00 बजे	बहुउद्देशीय वृक्षों और औषधीय पौधों का रोपण
12:30-13:00 बजे	समापन टिप्पणी और भविष्य की रणनीति

समन्वयक
डॉ. आई. डी. भट्ट, वैज्ञानिक "एफ" एवं केंद्र प्रमुख, सी. बी.सी.ऍम

संयोजक
डॉ सतीश आर्य, वैज्ञानिक 'डी'
डॉ सुबोध एरी, वरिष्टतकनीकी अधिकारी

आयोजक
जैव विविधता संरक्षण और प्रबंधन केंद्र (सीoबीoसीoएमo)
जीo बीo पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान (एनoआईoएचoईo)